P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

स्वच्छ भारत अभियान की सफलता में शिक्षा की भूमिका

भारती विजय
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रतिष्ठा पुरोहित
सहायक आचार्य,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
संजय शिक्षक प्रशिक्षण
महाविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

वर्तमान में राष्ट्रीय उत्पादन शक्ति में कमी, सकल घरेलू उत्पाद में नुकसान, पर्यावरण प्रदूषण व इससे सम्बन्धित बीमारियों का प्रमुख कारण लोगों में स्वच्छता व स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता व जानकारी का अभाव है। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान की 73.9 प्रतिशत जनसंख्या के पास शौचालय जैसी मूलभूत सुविधा भी उपलब्ध नहीं है, ऐसे में स्वच्छ पानी, स्वच्छ हवा का सपना अधूरा सा प्रतीत होता है।

शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके प्रकाश से हम अस्वच्छता की अंधेरों भरी राहों से भारत–वर्ष को मुक्त करा सकते है। यदि विद्यार्थियों को सही दिग्दर्शित नहीं किया गया तो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व स्वास्थ्य की नींव कमजोर हो जाएगी।

प्रत्येक स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर उनके शिक्षकों का प्रभाव सर्वाधिक होता है।विद्यार्थीकिसी घटना या वस्तु के सम्बंध में एक निश्चित दृष्टिकोण शिक्षक की सहायता से विकसित करते है। यदि शिक्षकों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति पर्याप्त जागरूकता होगी तो वह निश्चय ही अपने विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण व सुरक्षा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने का यथा सम्भव प्रयास करेंगे।

विद्यार्थी व शिक्षक स्वयं अस्वच्छता से उत्पन्न संकट के प्रति जागरूक होकर, समाज में इसके प्रति जागरूकता उत्पन्न कर भविष्य में संभावित एक भयंकर त्रासदी को टाल सकेगे।

मुख्य शब्द : स्वच्छ भारत अभियान, शिक्षा, पर्यावरण सरंक्षण व त्रासदी।

प्रस्तावना

विश्व के विकसित देशो में विकास और आधुनिकता के जो मानक तय किये गए है, उनमे स्वच्छता का महत्वपूर्ण स्थान है। मन, वाणी, कर्म, शरीर, समाज, परिवार, संस्कृति और व्यवहार से लेकर धर्म और विज्ञान तक में स्वच्छता का विशेष महत्व है। जीवन, परिवार, संस्कृति, राष्ट्र, विश्व और चेतना के उच्च आदर्श को प्राप्त करने के लिए स्वच्छता प्रथम सोपान है। केंद्र सरकार के स्वच्छ भारत अभियान ने देश के प्रत्येक व्यक्ति को स्वच्छता की ओर उन्मुख किया है और स्वच्छता को जीवन का हिस्सा बनाने हेतु प्रेरित भी किया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा स्वच्छ भारत अभियान को विद्यालयों से जोड़ देने हेतु स्वच्छ भारत – स्वच्छ विद्यालय अभियान चलाया गया। इस अभियान के प्रति जागरूकता लाने हेतु विद्यालयों में समय – समय पर कई गतिविधियों का आयोजन किया जाता हैं जैसे :–

1. विद्यालय में कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों के साथ सफाई और स्वच्छता के विभिन्न पहलूओं पर स्वच्छ भारत अभियान विशेष रूप से महात्मा गाँधीजी द्धारा दी गई की स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य से जुड़ी शिक्षाओं के सम्बन्ध में बात करना।
2. कक्षों, प्रयोगशालाओं और पुस्तकालयों आदि की सफाई करना।
3. शौचालयों और पीने के पानी वाले क्षेत्रों की सफाई करना।
4. निबंध, वाद–विवाद, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं को सफाई और स्वच्छता पर आधारित कर आयोजित करना।
5. बाल मंत्रिमण्डलों का निगरानी दल बनाना और सफाई अभियान की निगरानी करना।

इसके अलावा, फिल्मशो, स्वच्छता पर निबन्ध, पेंटिंग और अन्य प्रतियोगिताएँ, नाटकों आदि का आयोजन कर स्वच्छता व अच्छे स्वास्थ्य का संदेश प्रसारित करना। मंत्रालय ने इसके अलावा विद्यालय के छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को शामिल करते हुए सप्ताह में दो बार आधे घंटे सफाई अभियान शुरू करने का प्रस्ताव भी रखा है।

इन सभी कार्यों के वहन का उत्तरदायित्व शिक्षकों ने सफलतापूर्वक निभाया है।अतः स्वच्छ भारत अभियान के रथ के सारथी विद्यालयी शिक्षक बने है। बालक देश के भावी नागरिक हैं, आगे चलकर देश के कर्णधार यही बनेंगे। ये एक पौधे के समान है, जो प्रतिदिन विकास करता है। जैसे वातावरण में बालक रहेगा वैसा ही उसका विकास होगा, वैसा ही उसके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा। बालक के विकास को नई दिशा विद्यालय ही प्रदान करता है। इस प्रकार शिक्षक, विद्यार्थी, विद्यालय तीनो ही मिलकर स्वच्छ भारत अभियान की सफलता में अपना योगदान दे सकते है।

अध्ययन के उद्देश्य

जब–जब विश्व स्तर पर किसी समस्या के समाधान की बात सोची गई तब–तब एक मत होकर विचारकों ने उसे शिक्षा के माध्यम से हल करने का सुझाव दिया। 21वीं सदी की प्रमुख समस्याओं में स्वच्छ वातावरण का न होना भी एक प्रमुख समस्या है।

शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके प्रकाश से हम अस्वच्छता की अंधेरों भरी राहों से भारत–वर्ष को मुक्त करा सकते है। यदि शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर विद्यार्थियों को सही दिग्दर्शित नहीं किया गया तो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व स्वास्थ्य की नींव कमजोर हो जाएगी। यदि शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को श्रमनिष्ठा, स्वच्छता और साफ–सफाई की सीख देकर स्वच्छता की दिशा में उत्प्रेरित किया जाए तो यह एक अनूठी पहल होगी। स्वच्छता अभियान की सार्थकता के लिए विद्यालयी कार्य योजना का सफल क्रियान्वयन आवश्यक है।

प्रत्येक स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थियों पर उनके शिक्षकों का प्रभाव सर्वाधिक होता है अर्थात् वे किसी घटना या वस्तु के सम्बंध में एक निश्चित दृष्टिकोण शिक्षक की सहायता से विकसित करते है। यदि शिक्षकों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति पर्याप्त जागरूकता होगी तो वह निश्चय ही अपने छात्रों में पर्यावरण संरक्षण व सुरक्षा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने का यथा सम्भव प्रयास करेंगे।

विद्यार्थी व शिक्षक स्वयं अस्वच्छता से उत्पन्न संकट के प्रति जागरूक होकर, समाज में इसके प्रति जागरूकता उत्पन्न कर भविष्य में संभावित एक भयंकर त्रासदी को टाल सकेंगे।

शिक्षक व विद्यार्थी के कार्य, जागरूकता व दृष्टिकोण समाज व देश पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालते है अतः स्वच्छ भारत अभियान की सफलता में शिक्षक शिक्षा शिक्षार्थी की महत्वपूर्ण भूमिका से सभी को अवगत करा कर इस अभियान के प्रति जागरूकता लाना ही इस शोध अध्ययन का उद्धेश्य है ।

साहित्यवलोकन

गौत्तम, भगवती प्रसाद (2013) – '' अभियान ही आन्दोलन है, स्वच्छता'' नया शिक्षक टीचर टूडे, जुलाई–सितम्बर, 2013

सार

सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान वैयक्तिक नहीं, बल्कि सामूहिक अभियान है, राष्ट्रव्यापी जन–अभियान है। सही अर्थों में यह अभियान अब एक आन्दोलन का रूप ले चुका है। प्रजातांत्रिक व्यवस्था की भांति यह अभियान भी सभी का, सभी के द्वारा और सभी के लिए संचालित विशेष अभियान है।

इसमें विभिन्न वैश्विक, राष्ट्रीय एवं स्थानीय संगठनों, संस्थाओं जैसे– यूनिसेफ, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग, पंचायती राज, शिक्षा–विभाग, महिला एवं बाल विकास, गैर सरकारी संगठन आदि का भी अपना खास महत्व है।

अय्यंगार सुदर्शन (2014) – ''गाँधी जी और स्वच्छता'' योजना, अक्टूबर 2014

सार

भारत में स्वच्छता परिदृश्य अभी भी निराशा जनक है। हमने गाँधीजी के समाज–शास्त्र को समझाऔर स्वच्छता के महत्व को जाना। पारम्परिक तौर पर सदियों से सफाई के काम में लगे लोगों को गरिमा प्रदान करने की कोशिश की। आजादी के बाद से हमने उनके अभियान को योजनाओं में बदल दिया। योजनाओं को लक्ष्यों, ढांचों और संख्याओं तक सीमित कर दिया गया। हमने मौलिक ढांचे और प्रणाली से 'तंत्र' पर तो ध्यान दिया और उसे मजबूत भी किया लेकिन हम 'तत्व' को भूल गये जो व्यक्ति में मूल्य स्थापित करता है।

पाण्डेय, संदीप कुमार (2015)– ''स्वच्छ भारत अभियान में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्ता'' योजना, जनवरी 2015

सार

स्वच्छ भारत अभियान को सफल व अधिक प्रभावी बनाने में सूचना – प्रौद्योगिकी अपना महत्त्व दिखा सकती है। मोबाइल – एप्लीकेशन के माध्यम से लोगों को कचरे के ढेर व अनियमितता के बारे में स्थानीय निकायों को सूचित करने के लिए जीपीएस से जोड़कर तस्वीरों को भेजने का विकल्प दिया जा सकता है। इस तरह प्राप्त किये गए सचित्र प्रतिक्रिया के डाटा को मैप से जोड़कर संवेदनशील क्षेत्रों को चिन्हित कर उन्हें वरीयता दी जा सकती है। एनआरएचएम, एम–गवर्नेंस व मोबाइल आधारित कई सेवाओं की सफलता को देखते हुए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन से लेकर जैविक मल– पिटान तक इस दिशा में अपार संभावनाएँ है।

'स्वच्छ भारत की चुनौतियाँ' (2016) सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल, दिसम्बर 2016

सार

विश्व में कुल 95 करोड़ लोग खुले में शौच करते है, जिनमें से 60 प्रतिशत भारतीय है। 'टू कास्ट ऑफ सैनिटेशन' नाम की रिपोर्ट के अनुसार, शौचालय की सुविधा ना मिलने के कारण विश्व अर्थव्यवस्था को वर्ष 2015 में 14,9,0300 करोड़ रूपये का नुकसान हुआ। इस आर्थिक नुकसान का सबसे ज्यादा 77 प्रतिशत बोझ एशिया प्रशांत देशों पर पड़ता है, इसमें भारत को सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।

माहेश्वरी, सुरेन्द्र (2017) – ''शिक्षा–शिक्षक–स्वच्छता'', शिक्षक प्रभा, वर्ष–10, अंक–5, जुलाई 2017

सार

आज के बालक कल के नागरिक होंगे। यदि शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को श्रमनिष्ठा, स्वच्छता और साफ–सफाई की सीख देकर स्वच्छता की दिशा में उत्प्रेरित किया जाए तो यह एक अनूठी पहल होगी। स्वच्छता अभियान की सार्थकता के लिए विद्यालयी कार्य योजना का सफल क्रियान्वयन आवश्यक है।

गुप्ता, अशोक (2017) – '' स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरण'' शिक्षक प्रभा, वर्ष–10, अंक–5, जुलाई 2017

सार

स्वच्छता, स्वास्थ्य व पर्यावरण के बीच एक 'अटूट रिश्ता माना गया है। यदि उक्त तीनों घटकों के बीच सामन्जस्य स्थापित रहता हैं, तो हमारा परिवेश स्वच्छ रहता है, हम स्वस्थ रहते है। हमारी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थितियां अनुकूल होती है जिससे हम देश के विकास में योगदान दे सकते है। संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व स्वास्थ्य संगठन यूनेस्को, यूनिसेफ सहित कई संस्थायें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर, केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, सामाजिक संस्थाएँ स्थानीय स्तर पर स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक प्रयास कर रही है।

अय्यर परमेश्वरन (2017) – ''स्वच्छ भारत मिशनः– साझा दायित्व, योजना, मई 2017

सार

स्वच्छता हमारे स्वयं के लिए, समाज के लिए, पूरे विश्व के लिए महत्त्वपूर्ण है। अतः स्वच्छ भारत अभियान को सहभागिता द्वारा आगे बढ़ाना हम सभी का साझा दायित्व है।

गुप्ता राजेश (2018)– ''स्वच्छ भारतः– अर्थ प्रयास एवं आवश्यकता'' श्रृंखला एक शोधपरख वैचारिक पत्रिका, अप्रैल 2018

सार

स्वच्छ भारत अभियान को सहभागिता द्वारा आगे बढ़ाना आज भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि स्वच्छता देश के प्रत्येक व्यक्ति की आदत बन जाये तो देश की कायापलट ही हो जायेगी क्योंकि अस्वच्छता के कारण देश में भ्रष्टाचार, अनाचार स्वार्थ व हिंसा बढ़ता जा रहा है। ऐसे में देश के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा स्वच्छ रहने व दूसरों को स्वच्छता हेतु प्रेरित करने की प्रवृत्ति रखना, देश भक्ति का ही कार्य है।

सारांश

बालक एक कच्चे मिट्टी के घड़े के समान है जिसे शिक्षक जिस रूप में ढालना चाहे ढाल सकता है। शिक्षक के व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रभाव छात्र के जीवन में देखा जा सकता है।

शिक्षक राष्ट्र की रीढ़ है। वह इस अभियान को भली भांति समझकर भविष्य की व्यवहारगत व क्रियान्वित योजना के रूप में बनाने में सहायक है। शिक्षक को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इनकी बात को सुना व समझा जाता है। यदि किसी भी स्तर पर कोई परिवर्तन करना हो तो शिक्षक के द्वारा सहज रूप से किया जा सकता है।

विद्यालय में ही बालक के भविष्य का निर्माण होता है। इन बालकों के भविष्य की धुरी एक शिक्षक निर्धारित करता है। शिक्षक से ही मार्गदर्शन प्राप्त कर, अभिप्रेरित होकर विद्यार्थी अपने जीवन पथ की कठिनाइयों का पार कर सफलता के आकाश को छूता हैं, अतः स्वच्छ भारत अभियान की गतिशीलता का उत्तरदायित्व भी शिक्षकों के कंधों पर है। यदि 2019 तक एक स्वच्छ भारत का निर्माण कर महात्मा गाँधी का सपना साकार करना है तो शिक्षकों को तेजी से कार्यबद्ध होकर ईमानदारीपूर्वक, सकारात्मक अभिवृत्तिपूर्वक कार्य करना होगा।

स्वच्छता के प्रति समाज में बदलाव लाने का सबसे सशक्त माध्यम विद्यार्थी है। ये स्वयं को, परिवार, समाज व देश को विकास के उच्चतम शिखर तक पहुंचाने वाले मजबूत स्तम्भ है। विद्यार्थी अपने घर–परिवार के वातावरण, विद्यालय पोषाहार, शौचालयों की स्वच्छता का जितना अधिक ध्यान रखेंगे उतनी ही घातक बीमारियाँ नहीं फैलेगी, उत्पादकता बढ़ेगी, राष्ट्र का विकास होगा।

ये विद्यार्थी रूपी बीज, विद्यालय रूपी फल में विद्यमान रहते है। इन्हीं विद्यालयों से संस्कार व संस्कृति से ओत प्रोत भावी पीढ़ी निकलती है। पारिवारिक वातावरण के साथ–साथ विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के स्वास्थ्य व उनकी अधिगम गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

अतः शिक्षा के सभी अंगो (शिक्षक, विद्यार्थी, विद्यालय, पाठ्यक्रम) की स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

रिसर्च जनरल ऑफ सोशल एण्ड लाइफ साइन्सेस, रीवा, अंक–13, वर्ष 07, दिसम्बर, 2012 पृ. 324

सिन्हा मृदुला एवं सिन्हा, आर. के., स्वच्छ भारत ए क्लीन इंडिया : प्रभात प्रकाशन, पृ.सं. 24, 6 मई 2016.

बेदी किरण व चौधरी पवन ''स्वच्छ भारत चेक लिस्ट '' विस्डम विलेज पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, पृ0 सं0 18 1 जनवरी 2015

योजना, जनवरी 2015

http://swachhbharat.mygov.in/

Global-development/Reinent_the-toilet challenge

http://www.who.int/

http://mdws.gov.in/

http://archive.india.gov.in

प्रतियोगिता दर्पण, जनवरी–2017